पाठ-16

रामेश्वरम्

– महेन्द्र कुमार मानव

आइए सीखें

■ 'यात्रा वृतान्त' विधा ■ चारो धाम की जानकारी ■ रामेश्वरम् मंदिर की ऐतिहासिकता और शिल्पकला ■ विशेषण विशेष्य ■ विशेषण के भेद।

18 मई को प्रात:काल हमारी ट्रेन पामवन की ओर बढ़ी जा रही थी। ट्रेन ज़मीन की एक सकरी-सी होती जाती लम्बी पट्टी पर चल रही थी जिसके दोनों ओर समुद्र था। ट्रेन से हम दोनों ओर का समुद्र देख सकते थे। मण्डपम् में गाड़ी खड़ी हुई। यहाँ भी हमने दोनों ओर के सागर के दृश्य का आनन्द लिया। धीरे-धीरे दोनों तरफ के सागर निकट आते चले गए और ज़मीन की पट्टी सकरी होती चली गई। अब तो

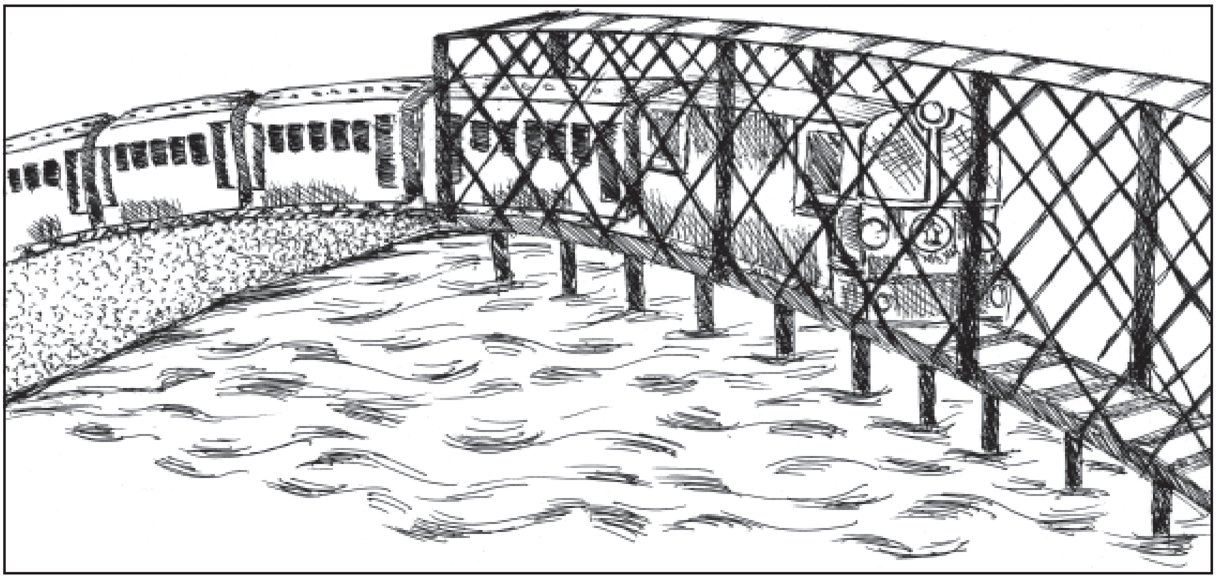

शिक्षण संकेत

▸ यात्रा के महत्व की जानकारी दें ▸ यात्रा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों एवं रचनाकारों की छात्रों से चर्चा करें ▸ कैलाश मानसरोवर एवं अमरनाथ की यात्रा का विवरण जुटाएँ ▸ पासपोर्ट एवं वीजा की आवश्यकता एवं महत्व से परिचित कराएँ।

केवल रेल की पटरी बची थी और इसके दोनों ओर सागर था। लीजिए वह पटरी भी खतम हो गई। आगे सागर ही सागर था। लेकिन तब भी हमारी ट्रेन रुकी नहीं, चलती ही रही। अब ट्रेन ज़मीन पर नहीं थी। सागर पर चल रही थी लोहे के बने पुल के सहारे। यह पामवन का पुल है और समुद्र पर बाँधा गया है। ट्रेन के दरवाज़े बाहर की ओर खुलते थे। इसलिए मण्डपम् में ट्रेन के सब दरवाजे चाभी द्वारा बन्द कर दिए गए थे। हमारे बाईं ओर पत्थरों का एक लम्बा सिलसिला चला गया था; जिनके ऊपर से समुद्र का पानी बहता था। परन्तु पानी के नीचे पत्थर साफ दिखाई पड़ते थे। कोई-कोई पत्थर पानी के ऊपर भी थे। भूमि पीछे छूट गई थी। यह पत्थर उसकी निशानी बता रहे थे। सबको अपने जीवन से मोह होता है। छिपकली की पूँछ कट जाने पर भी यह पूँछ जीवन के वियोग में घबराती रहती है। जब मनुष्य मरने लगता है तो अपने विगत जीवन को लालसा भरी दृष्टि से देखता है और जीवन की सारी भावनाएँ एक साथ उमड़ पड़ती हैं। पृथ्वी का अंत आ गया था। यह पत्थर के टुकड़े कहीं उसके दिल के टुकड़े तो नहीं थे जो उसके हृदय की व्यथा को व्यक्त कर रहे थे। या यों कहे कि पृथ्वी और समुद्र का मिलन हो रहा था। मिलन में तो उल्लास होता है परन्तु अपना अस्तित्व समाप्त करते हुए किसे अच्छा लगता है? पृथ्वी का अस्तित्व समाप्त होकर सागर का अस्तित्व व्याप्त हो रहा था; परन्तु उत्सर्ग में तो आनन्द है यानी पृथ्वी ने सर्वस्व का समुत्सर्ग करके अपने को सागर में समर्पित कर दिया था। कौन जाने उसके यह आँसू आनन्दाश्रु नहीं रहे होंगे।

यह रेल का पुल स्थिर नहीं है। जब जहाजों को निकलना होता है तब यह पुल उठा दिया जाता है जिससे स्टीमर एक ओर से दूसरी ओर चली जाए। लीजिए पामवन स्टेशन आ गया। यहाँ हमको रामेश्वरम् के लिए गाड़ी बदलनी है। पामवन, रामेश्वरम् और धनुष्यकोटि एक त्रिकोण के तीन बिन्दु हैं। तीनों एक टापू पर बसे हुए हैं। इस टापू पर रेत ही रेत और कुछ झाड़ झंखाड़ मौजूद हैं या आप यों कह लीजिए कि यहाँ समुद्र तट कुछ ऊँचा हो गया है। पामवन से कोई 15 मिनट में हम रामेश्वरम् जा पहुँचे। स्टेशन पर सामान छोड़कर हम सीधे मन्दिर पहुँचे। रामेश्वरम् चार धाम में से एक है। भारत के सब हिस्सों के आदमी रामेश्वरम् का दर्शन करने आते हैं। रामेश्वरम् का दर्शन किए बिना एक भारतीय अपने जीवन की सिद्धि का लाभ नहीं ले पाता। हम लोग मन्दिर में प्रवेश कर रहे हैं। लम्बी दालानों में से हम गुजर रहे हैं। दालानों की लम्बाई 4 हजार फुट है। हमारे दोनों ओर खम्भों की लम्बी पंक्ति चली गई है। मन्दिर का घेरा चतुष्कोण की शक्ल का है और उसका आयाम 650 फुट व 1000 फुट है। यह मन्दिर दक्षिण के स्थापत्य का सबसे सुन्दर नमूना है। गर्भगृह के सामने एक विशालकाय पत्थर का नन्दी बना हुआ है। मन्दिर के अन्दर एक कूप है; जो सर्वतीर्थ के नाम से विख्यात है। इस कूप के मधुर जल का हमने पान किया।

पूर्व तथा पश्चिम की ओर दो गोपुरम् हैं। पूर्व दिशा के गोपुरम् की ऊँचाई 186 फुट तथा

पश्चिम गोपुरम् की ऊँचाई 78 फुट है। दालानों के खम्भों की सिमिटरी देखते ही बनती है। हम शिल्पकार के कलाकौशल को देखकर दंग रह जाते हैं। इस मन्दिर की एक विशेषता और है। इस टापू पर कहीं कोई चट्टान या पत्थर नहीं है। फिर यह पत्थर कहाँ से आया होगा? कहा जाता है कि सर्वप्रथम इस मन्दिर का निर्माण श्रीलंका के राजा वरदराज शेखर ने 1000 वर्ष पहले किया था। वे लंका से पत्थर लाए और पत्थरों को कटवा-छँटवा कर उन्होंने मन्दिर का निर्माण कराया। सन् 1173 ईसवी में लंका के राजा पराक्रम बाहु ने रामेश्वरम् में एक मन्दिर बनवाया। सम्भवतः वही वर्तमान मन्दिर का माडेल होगा। फिर तो मन्दिर बढ़ता गया। नए-नए मन्दिर बनते गए। कई धनिकों, मदुरा के राजा विश्वनाथ नायर तथा रामेश्वरम् में राज्य करने वाले सतृयति राजाओं ने भी इस मन्दिर की श्रीवृद्धि की। कहते हैं कि जब रामचन्द्र जी रावण का वध करके लंका से लौटे तो मन्त्रियों ने उन्हें सलाह दी कि वे ब्रह्महत्या दोष निवारण के लिए शंकर जी की स्थापना करें। राम ने हनुमान को आज्ञा दी कि वे कैलाश जाकर शिवजी को ले आएँ। उधर हनुमान को लौटने में देर हुई। इधर सीता जी ने बालू से खेलते-खेलते एक शिवलिंग बनाया।

चूँकि मुहूर्त टल रहा था, इसलिए रामचन्द्र जी ने बालू के शिवलिंग की स्थापना करके उसकी पूजा की। पहले इस स्थान को देवनगर कहते थे, लेकिन जब राम ने यहाँ ईश्वर की पूजा की तब इस स्थान का नाम रामेश्वरम् पड़ा। कुछ दिन बाद हनुमान जी कैलाश से शिवलिंग लेकर आ पहुँचे। राम ने हनुमान की सराहना की और कहा कि तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं जाएगा। रामचन्द्र जी ने रामेश्वरम् के उत्तर में हनुमान द्वारा लाए गए शिवलिंग की स्थापना की, जिसका नाम विश्वनाथ पड़ा।

जब हनुमान जी सीता की खोज में इधर आए तब चट्टान पर से उन्हें लंका की भूमि नजर आई। उसी चट्टान को गंधमादन पर्वत कहते हैं। लंका जाने के पहले रामचन्द्र भी इस स्थान पर कुछ दिन रुके थे। आज भी यहाँ उनकी चरण पादुका विराजमान है। इस स्थान को रामझरोखा भी कहते हैं। यह स्थान रामेश्वरम् से उत्तरदिशा में करीब डेढ़ मील की दूरी पर है। रामेश्वरम् के निकट लक्ष्मणतीर्थ, रामतीर्थ और सीतातीर्थ हैं। मन्दिर के अन्दर 24 तीर्थ हैं। गंधमादन पर्वत की परिक्रमा में 11 तीर्थ हैं। इसके अतिरिक्त और भी अनेक तीर्थ हैं।

इस टापू की आबादी लगभग 14 हजार है। मन्दिर के प्राकार में दुकाने हैं। वहाँ से हमने जल्दी-जल्दी में कुछ शंख, कौंड़ियाँ, बेत की एक तश्तरी, चन्दन की एक छोटी-सी मूर्ति आदि सामान खरीदा। यहाँ ताड़ के पत्ते से बने सूटकेस और पंखे मिलते हैं। यहाँ के निवासियों की जीविका का साधन प्रमुखतः यात्री हैं और गाँव के लोग मछली मारकर अपना जीवन निर्वाह करते हैं। 1 बजने वाला था इसलिए हम सीधे स्टेशन पहुँचे। 1 बजे गाड़ी रवाना हुई। पामवन में गाड़ी

बदलकर हम धनुष्यकोटि पहुँचे। हमारी गाड़ी पहले जेट्टी पर रुकी। लंका जाने वाला जहाज खड़ा था। जो यात्री लंका जाना चाहते थे वे अपना पासपोर्ट बनवाकर लाए थे। मैं पछता रहा था कि लंका का पासपोर्ट बनवाकर क्यों नहीं लाया। धनुष्यकोटि से लंका लगभग 22 मील की दूरी पर है। जहाज के कप्तान से अनुमति लेकर हमलोग जहाज देखने के लिए उस पर चढ़े। यात्रीदल अपना पासपोर्ट जाँच कराने में लगा था। जहाज छोटा था। जहाज से उतरकर कुछ देर हम जेट्टी पर खड़े रहे और सामने असीम सागर की असीमता में लीन हो गए। हवा जोर की थी। दूरी पर रामेश्वरम् मन्दिर का गोपुरम् दृष्टिगोचर हो रहा था।

ट्रेन जेट्टी से रवाना हो चुकी थी और स्टेशन पहुँच गई थी। हम लोग पैदल स्टेशन जा पहुँचे। हमारे सामने सागर का नील जल लहरा रहा था। किनारे पर बालू बिछी थी। ऊपर नीले आकाश का चन्दोवा तना था। यदि आप मुक्त आकाश चाहते हों, यदि आप मुक्त सागर चाहते हों, यदि आप मुक्त समुद्र का किनारा चाहते हों तो धनुष्यकोटि जाइए और वहाँ मुक्त होकर विहार कीजिए। जेट्टी पर खड़े जहाज ने अपनी सीटी बजाई और उसने भारत की भूमि छोड़ दी। इस मुक्त वातावरण में उमा बहन ने दो भजन सुनाए; जो बिलकुल अनुकूल थे और आत्मा के बंधन काटकर उसे उन्मुक्त उदार और व्यापक बनाते थे।

कहते हैं जब भगवान राम ने लंका जाने का निश्चय किया तब उन्होंने पर्त्ररामनम नामक स्थान पर समुद्र पार हो जाने के लिए समुद्रराज वरुण से प्रार्थना की, लेकिन जब समुद्रराज ने अनुमति नहीं दी तब राम अत्यन्त कुपित हुए और उन्होंने अपने धनुष को सजाकर एक बाण निकाला। यह देखकर वरुण वहाँ प्रकट हुए और उन्होंने रामचन्द्र से क्षमायाचना की। तब भगवान राम शान्त हुए। यह धनुष्यकोटि स्थान हमें उसी पौराणिक कथा की याद दिलाता है।

धनुष्यकोटि में ठहरने के लिए कोई उत्तम स्थान नहीं है। सरकार की ओर से इस स्थान पर अच्छे होटलों का निर्माण कराया जाना चाहिए। शाम को लगभग 7 बजे ट्रेन ने स्टेशन छोड़ा। हमारे मन में एक अनुताप रहा कि ऐसे उन्मुक्त स्थान में आकर भी हम समय के बन्धन से बँधे रहे।

शब्दार्थ

वियोग=विरह। **व्यथा**=दुख। **उत्सर्ग**=त्याग, बलिदान। **चतुष्कोण**=चार कोण। **विशालकाय**=बहुत बड़ा आकार। **माडेल**=नमूना। **श्रीवृद्धि**=शोभा बढ़ना। **चरण पादुका**=खड़ाऊँ। **दृष्टिगोचर**=दिखाई देना। **कुपित**=क्रोधित, अप्रसन्न। **विगत**=बीता हुआ। **अस्तित्व**=सत्ता, हस्ती। **आनन्दाश्रु**=आनंद के आँसू। **आयाम**=फैलाव, लंबाई। **कूप**=कुआँ। **सिमिटरी**=एकरूपता। **विराजमान**=विद्यमान, बैठा हुआ। **उन्मुक्त**=पूर्णरूप से स्वतंत्र। **क्षमायाचना**=क्षमा माँगना। **अनुताप**=पश्चाताप। **सवृयति**=राजा का नाम। **पर्त्ररामनम**=स्थान का नाम।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **(क) सही जोड़ी बनाइए—**
   - समुद्रराज - विश्वनाथ नायर
   - चरण पादुका - शिव
   - कैलाशवासी - रामचद्र जी
   - मदुरा के राजा - वरुण

   (ख) दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
   - सबको अपने जीवन से .... होता है। (मोह/विद्रोह)
   - पामवन, रामेश्वरम् और धनुष्यकोटि एक .... के तीन बिन्दु हैं। (चतुष्कोण/त्रिकोण)
   - श्रीलंका के राजा .... ने रामेश्वरम् में मंदिर बनवाया। (वरदराज शेखर/पराक्रमबाहु)
   - रामेश्वरम् में मंदिर के अंदर .... तीर्थ हैं। (24/11)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—**

   (क) रामेश्वरम् क्यों प्रसिद्ध है?

   (ख) कैलाश जाकर शिवजी को लाने का दायित्व किसको सौंपा गया था?

   (ग) गंधमादन पर्वत किसे कहते हैं?

   (घ) श्रीराम के कुपित होने पर समुद्रराज ने क्या किया?

   (ङ) किसका नाम विश्वनाथ पड़ा?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-से-पाँच वाक्यों में दीजिए—**

   (क) पामवन के पुल की क्या विशेषताएँ हैं?

   (ख) 'उत्सर्ग में तो आनंद है' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

   (ग) रामेश्वरम् का दर्शन करना लाभदायक क्यों माना गया है?

   (घ) देवनगर से रामेश्वरम् नाम पड़ने की अन्तर्कथा स्पष्ट कीजिए।

   (ङ) धनुष्यकोटि का क्या महत्व है?

भाषा की बात

4. **निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—**

   दृश्य, समुद्र, प्रात:काल, अस्तित्व, उत्सर्ग, रामेश्वरम्, स्थापत्य, गर्भगृह, संभवत:

5. **निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए—**

   लालषा, हिरदय, स्थर, पंक्ती, तीरथ, मालुम, शोभाग्य, अनुमती, दृष्टीगोचर,पुराणिक

6. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**

निर्माण, उदार, वातावरण, असीम, विराजमान, कलाकौशल

ध्यान दीजिए

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और समझिए—

- उद्यान में लम्बी सड़कें बनाई गई हैं।
- वन में चंचल हिरणों के झुंड दिखाई दे जाते हैं।
- मैंने छोटे सींग वाली नील गायें भी देखी हैं।
- पहाड़ी इलाकों में साँभर मिलते हैं।
- चीता फुर्तीला प्राणी है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द अपने आगे वाले संज्ञा शब्दों की विशेषता बता रहे हैं। जैसे-लम्बी सड़क की, चंचल-हिरणों की, छोटे सींग वाली-नील गायों की, पहाड़ी-इलाकों की और फुर्तीला शब्द प्राणी की विशेषता बता रहे हैं।

संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। जिसकी विशेषता बताई जाती है उसे विशेष्य कहते हैं। जैसे-उपर्युक्त वाक्यों में सड़कें, हिरणों, नील गायें, इलाकों और प्राणी विशेष्य हैं।

7. **निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए—**
   1. हमारी ट्रेन लम्बी पट्टी पर चल रही थी।
   2. यह रेल का पुल स्थिर नहीं है।
   3. इस कूप के मधुर जल का हमने पान किया।

अब करने की बारी

- रामेश्वरम् जाने के लिए बस तथा ट्रेन से यात्रा के बीच में पड़ने वाले नगरों को मानचित्र में खोजिए।
- पासपोर्ट तैयार करवाने में किन-किन प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है? इसकी जानकारी प्राप्त कीजिए।
- प्रमुख तीर्थ स्थलों की जानकारी एकत्रित कर पोस्टर के माध्यम से प्रदर्शित कीजिए।
- प्रमुख तीर्थ स्थलों के चित्रों का एलबम तैयार कीजिए।

विविध प्रश्नावली-2

प्रश्न-1 सही जोड़ी बनाइए—

- कर्त्तव्य - दिवस
- सहन - परायणता
- उपभोक्ता - जोखा
- लेखा - शीलता

प्रश्न-2 सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

अ. मुझको अपनी ------- पर बहुत-बहुत अभिमान है। (मानवता/दानवता)

ब. बाथरूम की फिसलन पाठ ------ विधा के अन्तर्गत आता है। (कहानी/व्यंग्य)

स. सबको अपने जीवन से ----------- होता है। (मोह/विद्रोह)

द. नर्मदा ------------- की ओर बहती है। (पूर्व/पश्चिम)

स. वस्तु का उपयोग करने वालों को -------- कहते हैं। (विक्रेता/उपभोक्ता)

प्रश्न-3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

क. 'कोई नहीं पराया' कविता में कवि ने अपना आराध्य किसे माना है?

ख. आई.एस.आई. और एगमार्क अंकित वस्तुएँ ही क्यों खरीदी जानी चाहिए?

ग. गौंड़, भील, बैगा स्त्रियों को किस चीज से लगाव होता है?

घ. राजेन्द्र सिंह ने कौन-सा सम्मान प्राप्त किया था?

ङ मदनमोहन मालवीय जी ने अपने जीवन में कौन-सा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किया?

प्रश्न-4 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में दीजिए—

क. साहसी व्यक्ति को किन-किन गुणों से पहचाना जाता है?

ख. लेखक कटुवादी होने से क्यों बचना चाहता था?

ग. 'नई सुबह' कहानी में गीता ने पिताजी से क्या निवेदन किया?

घ. 'नर व्याघ्र' का प्रयोग किसके लिए किया गया है और क्यों?

ङ पामवन के पुल की क्या विशेषताएँ हैं?

प्रश्न-5(क) दिए गए शब्दों में से समुद्र, पथ, नर, माता एवं सर्प के पर्यायवाची छाँटकर लिखिए—

सागर, जननी, पुरुष, जलनिधि, माँ, मनुष्य, भुजंग, रास्ता, विषधर, मार्ग

(ख) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

रक्त उबल पड़ना, नौ-दो ग्यारह होना, दिन-रात एक करना, ईद का चाँद होना

प्रश्न-6(क) निम्नलिखित शब्दों में से विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए—

काला बादल, लम्बी सड़क, चंचल मन, मधुर वाणी

(ख) दिए गए वाक्यों में से अविकारी शब्द छाँटकर लिखिए—

- समीक्षा अपने पापा के साथ मेला देखने गई।
- लगातार परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होती है।

प्रश्न-7(क) कोष्ठक में दिए गए सर्वनाम शब्दों में से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—

[उसे, मेरी, तुम्हारी, हमारा]

क. राखी ने कहा ये सब ------ सहेलियाँ हैं।

ख. अजय को बुलाओ ------ बाजार भेजना है।

ग. ------ घर विद्यालय के सामने है।

घ. पल्लवी ने राधिका से कहा --------- फ्राक बहुत सुन्दर है।

(ख) निम्नलिखित शब्दों को 'र' के विभिन्न रूपों का प्रयोग कर शुद्ध शब्द बनाइए—

चर्‌चा, ट्‌राली, परखर, निर्‌देशक

प्रश्न-8 दिए गए शब्दों की संधि कीजिए—

अधः+गति, कवि+ईश, देव+ऋषि, उत्+चारण, उत्+हरण, निःधन, अति+अधिक, विद्या+आलय

प्रश्न-9 'नई सुबह' कहानी का सारांश लिखिए।

प्रश्न-10 किसी एक विषय पर 100 शब्दों में निबंध लिखिए—

- साहस
- दहेजप्रथा
- जागरुक उपभोक्ता
- सहनशीलता

❑❑